MAA OMWATI DEGREE COLLEGE, HASSANPUR (PALWAL)

NOTES

SUBJECT : **Hindi (Aadhunik Hindi Kavita)**

CLASS : **B.A. 3rd Sem**

SESSION : **2021-2022**

संयुक्त पाठ्यक्रम

(महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय और कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालय के लिए)

जुलाई २०१३

बी०ए० : ततीय सेमेस्टर

हिन्दी (अनिवार्य)

समय : ३ घण्टे

कुल अंक : १००
लिखित परीक्षा : ८० अंक
आंतरिक मूल्यांकन : २० अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम

- आधुनिक हिंदी कविता,
  प्रधान सं० डॉ० सरिता वशिष्ठ, कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालय प्रकाशन, कुरुक्षेत्र
- िंदी साहित्य का रीतिकाल
- प्रयोजनमूलक हिंदी : हिंदी कंप्यूटिंग और अनुवाद
- वस्तुनिष्ठ प्रश्न

खण्ड--क : आधुनिक हिंदी कविता

निर्धारित आलोचनात्मक प्रश्न

पाठ्यक्रम में निर्धारित कवियों के साहित्यिक परिचय, अनुभूतिगत वैशिष्ट्य तथा अभिव्यक्तिगत सौष्ठव पर ही प्रश्न पूछे जाएंगे । कवियों की विशिष्ट रचनात्मक प्रवत्ति पर प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे ।

खण्ड--ख : हिंदी साहित्य का रीतिकाल

पाठ्यक्रम में निर्धारित आलोचनात्मक प्रश्न

१ रीतिकालीन हिंदी कविता की पष्ठभूमि
२ रीतिकाल का नामकरण
३ रीतिबद्ध काव्य की विशेषताएँ
४ रीतिमुक्त काव्य की विशेषताएँ
५ रीतिकालीन काव्य की उपलब्धियाँ

खण्ड--ग : प्रयोजनमूलक हिंदी : हिंदी कंप्यूटिंग और अनुवाद

पाठ्यक्रम में निर्धारित विषय

१ कंप्यूटर : स्वरूप और महत्व
२ ई–मेल : प्रेषण–ग्रहण
३ इंटरनेट : स्वरूप और उपयोगिता
४ मशीनी अनुवाद
५ अनुवाद : परिभाषा और स्वरूप

NOTES

Index

क्र०सं०		पेज संख्या
1	राधा की प्रेम पीड़ा का वर्णन	1 से 2
2	राधा द्वारा पवन दूती को संदेशवाहक बनाना	3 से 4
3	जयद्रथ वध का कारण	5-6
4	परिस्थितियो से प्रभावित रीतिकालीन काव्य का परिचय	7 से 10
5	रीतिबद्ध विशेषताओ पर प्रकाश	11 से 14
6	रीतिकाल की परिस्थितिया	15 से 18
7	अयोध्या सिंह उपाध्याय का साहित्यिक परिचय	19 से 20
8	जय शंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय	21 से 22
9	सुर्यकान्त त्रिपाठी निराला का साहित्यिक परिचय	23 से 26
10	निराला जी द्वारा किया गया विधवा का कारुणिक चित्रण	27 से 28
11	निराला द्वारा रचित कविता बादल राग का उद्देश्य	29 से 30
12	रीतिकाल की सीमा एवम नामकरण पर चर्चा	31 से 32
13	रीति मुक्त काव्य की परम्परा का उल्लेख	33 से 36
14	रीतिकालीन काव्यधारा की विशेषताऐ	37 से 50
15	रीतिबद्ध काव्यधारा की विशेषताऐ	51 से 54
16	रीतिकालीन हिन्दी काव्य के प्रेरक तत्व	55 से 56
17	रीतिकालीन हिन्दी कविता की पृष्ठ भूमि स्पष्ट कीजिए	57 से 59

राधा की प्रेम-पीड़ा का वर्णन

BA III Sem Hindi

Page No. 1
Date / /

भूमिका →

उपाध्याय जी का महाकाव्य "प्रिय प्रवास" मूल रूप से विरह काव्य ही है जिस मे राधा की वेदना का मूर्त मार्मिक चित्रण किया है इस काव्य मे यशोदा, नंद, राधा और ब्रजबालाओ का विरह वर्णन विद्यमान है राधा और ब्रज बालाओं के विरह मे जो मार्मिकता है वह और किसी मे नही है वह पारमपरिक विरह - गृन्थो जैसा कदापि नही है ब्रज बालाए कृष्ण के साथ विज्ञिप्तो जैसा व्यवहार करती है राधा का वियोग श्रृंगार ऐसा ही है जो उसे मानसिक संतुलन खोने नही देता है

राधा और श्री कृष्ण जी का बचपन :→

श्री कृष्ण और राधा एक दूसरे को बचपन से ही जानते थे वे बचपन से ही एक दूसरे के साथ खेला करते थे और एक दूसरे को भली - भाँति समझते थे

श्री कृष्ण के मथुरा जाने पर :→

जब श्री कृष्ण जी मथुरा चले जाते है तो राधा उनके प्रेम मे अनेक पीड़ाओ को सहती है वह मुरझा जाती है उसके प्रेम मे आसू बहती है वियोग मे वह निरंतर पीड़ा सहन करती है

मूक प्रेमी →

श्री राधा जी कृष्ण के मथुरा जाने के बाद उनसे मन ही मन प्रेम करती है अपने प्रेम के बारे में किसी से भी गिला नहीं करती है

पवन के दूत के रूप में →

राधा पवन को दूत बनाकर मथुरा भेजती है वह श्री कृष्ण से किसी प्रकार मिलना चाहती है उसके हृदय में वियोग - पीड़ा के साथ लोक कल्याणकारी गुण विद्यमान है

निष्कर्ष →

अतः राधा जी श्री कृष्ण से अथाह प्रेम करती है वह वियोग में आंसु बहाती है

राधा की प्रेम पीड़ा

↓

राधा और श्री कृष्ण जी का बचपन
श्री कृष्ण के मथुरा जान पर
मूक प्रेमी
पवन के दूत के रूप में

↓

निष्कर्ष

((राधा द्वारा पवदूती को संदेशवाहक बनाना))

भूमिका :⇒

"हरिऔध" द्वारा रचित कविता में मौलिक उद्भावनाओं को प्रस्तुत करने के लिए विख्यात थे। उन्होंने राधा जी का रूप ही नहीं बदला बल्कि उसे लोक कल्याण-कारी बताया है संदेशों के आदान-प्रदान के लिए अनेक साधन थे जैसे किसी ने बादलों को दूत बनाया तो किसी ने कबूतर को दूत बनाया है परन्तु "हरिऔध" जी ने पवन को अपना दूत बनाया है

दूत रूप में पवन की अनूठी क्षमता :⇒

पवन पाँच तत्वों में से एक है यह बहुत ही महत्वपूर्ण और शक्तिशाली तत्व है वाणी न होने के कारण पवन राधा के रहस्यों को स्पष्ट से व्यक्त क्षमता से रहित है दूसरा कोई इनकी वाणी को नहीं सुन सकता है

राधा के प्रेम की शालीनता :⇒

राधा जी श्री कृष्ण से प्रेम करती है और अपने प्रेम के बारे में किसी से नहीं कहती है उनका व्यवहार शालीन है उसमें नारी सुलभ लज्जा थी। वह अपने प्रेम को प्रकट करती तो मथुरा वृन्दावन से ज्यादा दूर नहीं था।

4

Page No.
Date / /

मनोवैज्ञानिकता :→

हर व्यक्ति अपने हृदय के सुख दुख को दूसरो के साथ बांटना चाहता है मनोविज्ञान के आधार पर यह उचित भी है क्योंकि इसमे तनाव कम होता है इसीलिए राधा जी अपनी बातो को पवन से कहती है

अतृप्त कामनाओ की तृप्ति व लोकहित आधार :→

राधा के मन मे श्री कृष्ण के प्रति प्रेम का भाव था। व जिसे उसने स्पष्ट रूप से स्वीकार भी किया। वह लोक कल्याणकारी भी है वह अपने प्रेम के साथ -2 समाज के कल्याण की ओर भी ध्यान देती है

निष्कर्ष :→

अत: राधा जी ने अपने संदेश को भेजने के लिए पवन को संदेशवाहक बनाया है अपने मन की भावनाओ को वायु के साथ -2 व्यक्त करती है

((जयद्रथ वध का कारण))

Page No. 5
Date / /

भूमिका :→

"जयद्रथ - वध" श्री मैथिलीशरण द्वारा रचित महत्वपूर्ण रचना है इसमे कवि ने जयद्रथ-वध का चित्रण किया है कौरवो तथा पाड़वो का युद्ध हुआ जिसमे उसमे एक चक्रव्यूह की रचना की और अभिमन्यु को घेरकर सारे कौरव योद्धाओ ने मिलकर मार डाला जिसका कारण जयद्रथ का छल था।

द्रोणाचार्य द्वारा चक्रव्यूह का निर्माण :→

कौरवो ने युधिष्ठर को बन्दी बनाने के लिए एक चक्रव्युह की रचना की थी। जिसमे अभिमन्यु अकेला वीरता से लड़ता हुआ अन्दर चले जाता है किन्तु वह वापिस आना नही जानता था अतः जयद्रथ ने अपने गदा से छल से अभिमन्यु का वध कर दिया।

अर्जुन की प्रतिज्ञा :→

अपने पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनकर अर्जुन ने एक भीष्म प्रतिज्ञा की। यदि मैंने कल सूर्य अस्त तक जयद्रथ को नही मारा तो मै अपने आप को अग्नि को समर्पित कर दूगा।

श्री कृष्ण की लीला :→

जब कौरवो ने जयद्रथ को बचाने के लिए एड़ी-चोटी का जोर

DELTA Page No.
Date / /

लगा दिया और जब अर्जुन उसे मारने मे सक्षम नही हुआ तो कृष्ण ने अपनी माया से सूर्य को बादलो मे छिपा लिया था। अतः जयद्रथ बहुत खुश हुआ और स्वयं अर्जुन के सामने आ गया। कृष्ण ने सूर्य को फिर से निकाल दिया। इस प्रकार अर्जुन ने जयद्रथ का वध कर दिया।

निष्कर्ष:→

अतः जयद्रथ ने छल से अभिमन्यु का वध कर दिया तो अर्जुन ने पुत्र की की मृत्यु का बदला लेने के लिए प्रतिज्ञा ली थी।

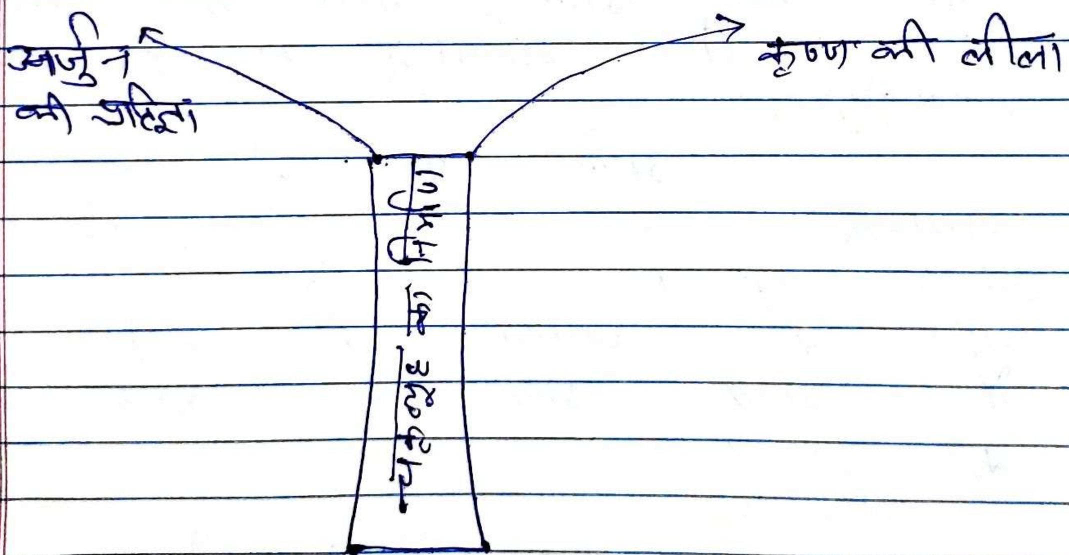

((परिस्थितियों से प्रभावित रीतिकालीन काव्य का परिचय))

भूमिका →

प्रत्येक साहित्यकार अपने परिवेश एवं युगीन परिस्थियों से प्रभावित होकर अपने साहित्य के लिए इससे ही आपेक्षित सामग्री ग्रहण करता है युग की विभिन्न परिस्थियों का अध्ययन करने के बाद ही हम साहित्यकार की गहराई तक पहुंच सकते हैं इस काल की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक और कलात्मक परिस्थितियों का उल्लेख मिलता है

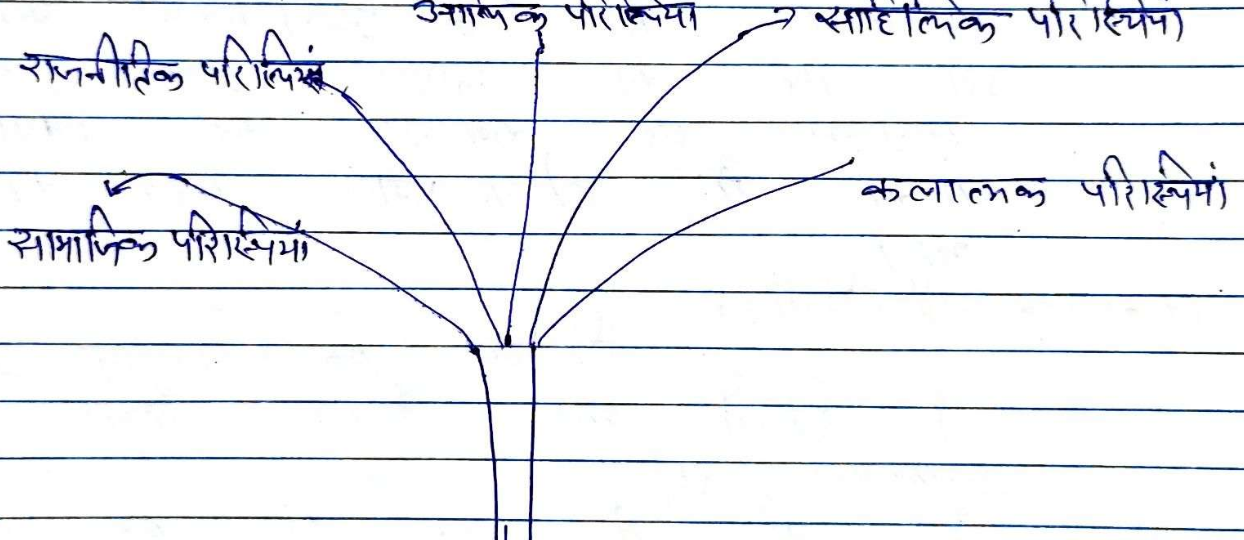

Page No.
Date / /

1. राजनीतिक परिस्थितियाँ :→

रीति काल का समय राजनीतिक दृष्टि से ह्रास और पतन का युग था। अकबर ने हिंदू तथा मुसलमानो मे आपसी एकता के लिए अनेक प्रयास किए किंतु जहाँगीर ने सुरा और सुंदरी के प्रति अपनी उत्तराधीकारीयों को प्रभावीत किया। गद्दी के लिए आपस मे लड गए। औरंगजेब ने भाईयों की हत्या करने के बाद गद्दी प्राप्त कि थी। औरंगजेब के उत्तराधीकारी कमजोर निकले। इस बाद का फायदा उठाकर अंग्रेजो ने साम्राज्य पर कब्जा कर लिया। अतः वास्तव मे ही यह युग पतन का युग था।

2. सामाजिक परिस्थितियाँ :→

रीतिकाल एक विलास प्रधान काव्य है जिसमे धन ऐश्वर्य, वैभव की प्रधानता रही, है मुगल बादशाह ज्यादातर शराब के नशे मे रहते थे। एक पत्नी धर्म समाप्त हो गया और छोटे - मोटे सामंतो के पास रखैलो की संख्या अधिक हो गई। अब स्त्री केवल मनोरंजन का साधन नम-मात्र रह गयी थी। बहु विवाह बाल विवाह आदि का प्रचलन चल गया था। इस काल मे महामारी ने इसकी जडे खोखली कर दी थी।

धार्मिक परिस्थितियाँ :→

रीतिकालीन परिस्थितियाँ कुछ ऐसी बन गई थी। जिन्होने धर्म के उदात्त तत्व को नष्ट कर दिया। नैतिक बन्धन इतने शिथिल हो गए। थे कि आडंबरो व रूढ़ियो ने धर्म का स्थान ले लिया था। पंडित और मुसलमानो की तूती बोलने लगी थी। उनकी वाणी को ही वेद काव्य व पुराण के समझा जाने लगा।

साहित्यिक परिस्थितियाँ :→

मुगल काल की दरबारी भाषा फारसी थी, इस काल में शुद्ध ईरानी और भारतीय ईरानी शैली का प्रचलन है लैला मजनू आदि जैसी कहानियाँ रोमानी, पद्यात्मक शैली मे लिखि जाती थी। मुगल काल के दरबार मे हिंदी और संस्कृत कवियो को कुछ प्रश्रय मिलकर औरंगजेब की कट्टर नितियो ने दरबार से हिन्दी को निकाल दिया।

कलात्मक परिस्थितियाँ :→

रीतिकाल के कलाक्षेत्र मे प्रदर्शन की प्रवृति की प्रधानता रही है इसमे मौलिकता की कमी है पर सामंती युग की वासनात्मकता अधिक है। चित्रकारो ने राग-रागिनियो पर आधारित प्रतीत चित्र बनाए उन्होने देवी-देवताओ को भी सामान्य नायक-नायिका के रूप मे अंकित किया।

10

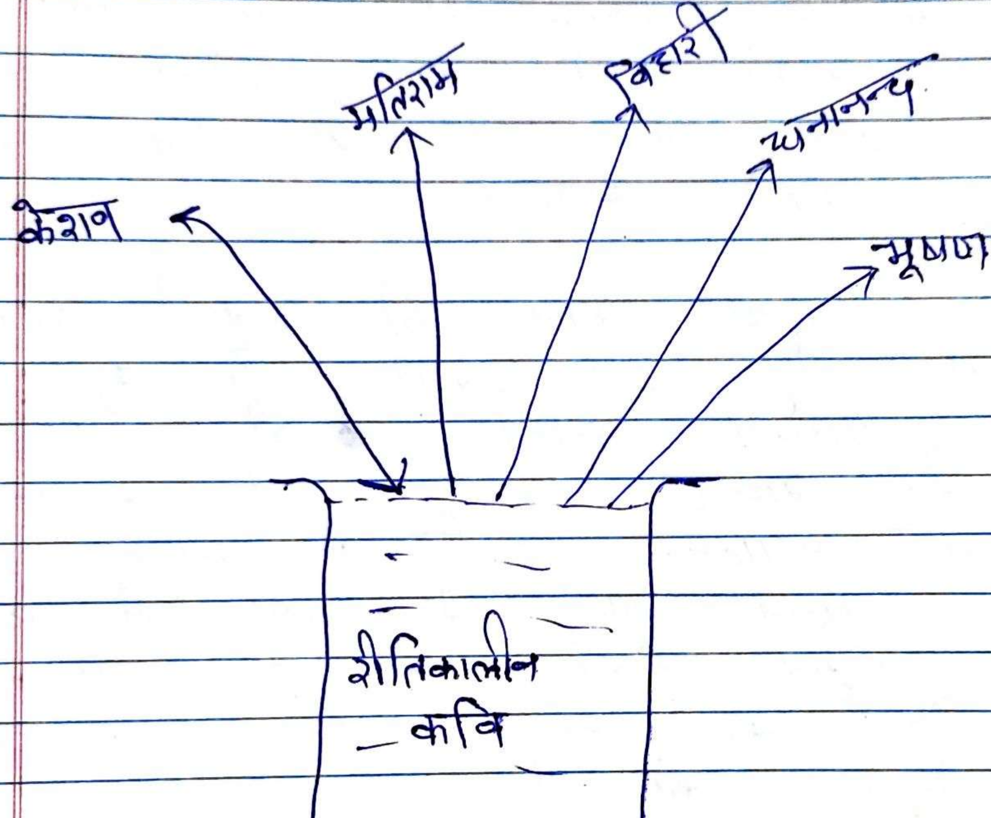

रीतिकालीन परंपरा का परिचय व रीतिबद्ध विशेषताओं पर प्रकाश

भूमिका :-

रीतिकालीन काव्य व काव्य है जिसमें संस्कृत के काव्य शास्त्र के आधार पर काव्य अंगो का निरुपण किया गया थी रीतिकालीन कवियों ने एक साथ कवि और आचार्य बनने का प्रयास किया। उस समय राजा और महाराजा केवल कविता सुनकर ही खुशी नहीं होते बल्कि इस काल के राजा स्वयं रचना करना पसन्द करते थे। रीतिकाल काव्य के कवि आचार्य दो भागों मे बांटे जाते थे एक तो वे है जिन्होंने लक्षण ग्रन्थ की रचना के साथ-2 लक्ष्य ग्रंथ लिखे हैं। दूसरे वे है जिन्होंने लक्षण ग्रन्थ लिखे है काव्य प्रकाश की शैली पर लिखने वाले ने प्रायः काव्यांगों पर लिखा, श्रृंगार तिलक की शैली पर लिखने वालों ने नायिका भेद किया।

रीतिकालीन कवियों की निम्नलिखित प्रवृत्तियां :->

Page No.
Date / /

श्रृंगारिता :→

रीतिकाल मे साहित्य मे श्रृंगारिता की प्रवृति सबसे अधिक है संस्कृत काव्य शास्त्र मे नायिका भेद, अलंकार आदि की शास्त्रीय आधार भूमि इन्हे मिल गई थी। रीतिकाल के वैभव विलास से युक्त उन्मादक वातावरण ने इन्हे श्रृंगारिक काव्य लिखने के लिए प्रेरित ही नही किया परन्तु बढ़ावा भी दिया, श्रृंगार रस को संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार दो भागो मे विभक्त किया जाता है

अलंकारिता :→

श्रृंगारिकता के पश्चात् रीति काव्य की प्रमुख प्रवृति अलंकारिता है इन कवियो की रुचि प्रदर्शन और चमत्कार मे अधिक थी। अनेक रीतिबद्ध कवियों ने स्वतंत्र अलंकार संबंधी ग्रंथ लिखे। अलंकारो भी खूब फूली-फूली अत्यधिक अलंकारो के मोह ने इसके काव्य सौंदर्य को विकृत ही किया है

लक्षण ग्रंथो का निर्माण :→

सभी रीतिबद्ध कवियों ने संस्कृत काव्य शास्त्र पर आधारित लक्षण ग्रन्थो का निर्माण किया। इन्होने कवि कर्म और आचार्य कर्म एक साथ निभाने की कोशिश की। इनके लक्षण ग्रन्थो के निर्माण से भारतीयो का कोई महत्वपूर्ण विकास नही हो पाया।

भक्ति और नीति :→

रीतिकालीन काव्य में पर्याप्त मात्रा में भक्ति नीति संबंधी सूक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं पर न वे भक्त कवि थे और न ही राजनीति विशारद। रीति कवियों ने भक्ति ग्रंथों से अपने श्रृंगारिक काव्य के लिए पर्याप्त प्रेरणा प्राप्त कर ली थी। भक्ति इन के जीवन की थकान की द्योतक है।

वीर काव्य :→

रीतिकाल की राजनीतिक परिस्थितियाँ कुछ ऐसी ही बनकर रह गई हैं कि हिंदू जनता में मुसलमानों शासकों की अत्याचारी नीतियों के प्रति विद्रोह की भावना उमड़ने लगी थी। पंजाब और हरियाणा में रचित 25 ऐसे वीर रस के काव्यों की सूचना दी है जो गुरुमुखी लिपि में निबद्ध हैं।

प्रकृति चित्रण :→

रीति काव्य में स्वतंत्र रूप से प्रकृति चित्रण प्रायः नहीं हुआ है ये चित्रण आलंबन रूप में कम है ऐसा होना स्वभाविक भी है। सेनापति के काव्य में प्रकृति चित्रण बहुत सुन्दर है तीज - त्योहार, झूले - हिंडोले आदि का वर्णन इन्होंने अच्छा किया है।

नारी चित्रण :→

इस युग में नारी केवल विलास की वस्तु बनकर रह गई है वह केवल एक विलासिनी प्रेमिका है गृहणी, माता, बहन, आदि

का कोई रूप नहीं था। दरबारी कवि केवल नारी के अश्लील चित्र बनाने मे लगे थे। रीति मुक्त कवियों ने भी नारी को कोई विशेष महत्व नहीं दिया।

प्रतियोगिता की भावना ⇒

रीतिकाल मे राजदरबारो मे कवियो का दंगल लगा रहता था। वे अपने आप को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए वे प्रतियोगिता की भावना भी बहुत प्रबल थी।

काव्य रूप ⇒

रीति कवियो का प्रमुख प्रयोजन चमत्कार प्रधान काव्य रच कर राजाओ और आश्रयदाताओं को प्रसन्न करना था। उन्होने मुक्तक काव्य शैली को अपनाया।

ब्रज भाषा की प्रधानता ⇒

रीतिकाल की प्रमुख भाषा साहित्यिक ब्रज भाषा है इस भाषा मे कोमल रसो की अभिव्यक्ति करने की अद्भुत क्षमता है इसकी प्रकृति अत्यंत मधुर है रसखान घनानंद आदि की भाषा परिनिष्ठित है

[रीतिकालीन काव्य जिन परिस्थितियों से प्रभावित हुआ]

भूमिका →

प्रत्येक साहित्यकार अपने परिवेश एवं युगीन परिस्थितियों से प्रभावित होकर अपने साहित्य के लिए उनसे ही अपेक्षित सामग्री ग्रहण करता है। आचार्य किसी युग की विभिन्न परिस्थितियों के अध्ययन के द्वारा ही किसी साहित्य की गहराई तक पहुंचा जा सकता है। आचार्य शुक्ल के अनुसार प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की संचित चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है।

1. राजनीतिक परिस्थितियां -

रीतिकाल का समय राजनीतिक दृष्टि से ह्रास और पतन का समय था। अकबर ने हिंदु - मुसलमानों में पारस्परिक एकता स्थापित करने का भरसक प्रयास किया था, परंतु उसके बाद जहांगीर ने सुरा और सुंदरी के प्रति अपनी जो लोलुपता दिखलाई उसने उसके उत्तराधिकारियों को प्रभावित किया। शाहजहाँ का समय प्राय! सुख शांति तथा सांस्कृतिक - कलात्मक

उदारता का था। इस समय में समाज में प्रदर्शन प्रियता को बढ़ावा दिया गया। शाहजहाँ के बीमार पड़ते ही उसके पुत्र राजगद्दी प्राप्त करने के लिए एक दूसरे के साथ हिंसक पशुओं की भांति लड़ने लगे।

2. सामाजिक परिस्थितियाँ

रीतिकाल विलास प्रधान काल है जिसमें धन, वैभव और ऐश्वर्य की प्रधानता रही। मुगल बादशाह अधिकतर शराब के नशे में चूर रहते थे। शाहजहाँ की प्रदर्शन प्रवृत्ति और वैभव प्रियता ने केवल अपने खजाने को ही खाली नहीं किया बल्कि सामंतीय जीवन को भी बहुत अधिक प्रभावित किया। एक पत्नी धर्म तो लगभग समाप्त ही हो गया था। छोटे - मोटे सामंतों के पास रखैलों की भीड़ रहने लगी थी।

3. धार्मिक परिस्थितियाँ

रीतिकालीन धार्मिक परिस्थितियाँ कुछ ऐसी बन गई थी जिन्होंने धर्म के उदात्त तत्व को नष्ट कर दिया था। नैतिक बंधन इतने शिथिल हो गये थे कि आडंबरों एवं रूढ़ियों ने धर्म का स्थान ले लिया था। पंडितों और मुल्लाओं की तूती बोलने लगी थी और उनकी वाणी को ही वेद वाक्य और कुरान समझा जाने लगा था। धर्म की स्थिति अत्यंत शोचनीय हो गई थी।

4. साहित्यिक परिस्थितियाँ

मुगल काल की दरबारी भाषा फारसी थी। इस काल में प्रायः शुद्ध ईरानी भारतीय ईरानी शैली प्रचलित थी। लैला-मजनू जैसी रोमानी कहानी पद्यात्मक शैली में काव्य लिखी जाती थी। साथ ही मुसलमान शासक आत्म प्रशंसा सुनाने को सदा ही लालायित रहते थे।

रीतिकालीन कवियों ने राधा कृष्ण के मांसल और कामुक चित्र अंकित किए शाहजादे के दरबार में हिन्दी और संस्कृत के कवियों को विपुल प्रश्रय मिला। पर औरंगजेब की कट्टर नीतियों ने मुगल दरबार से हिन्दी को निकालकर बाहर कर दिया।

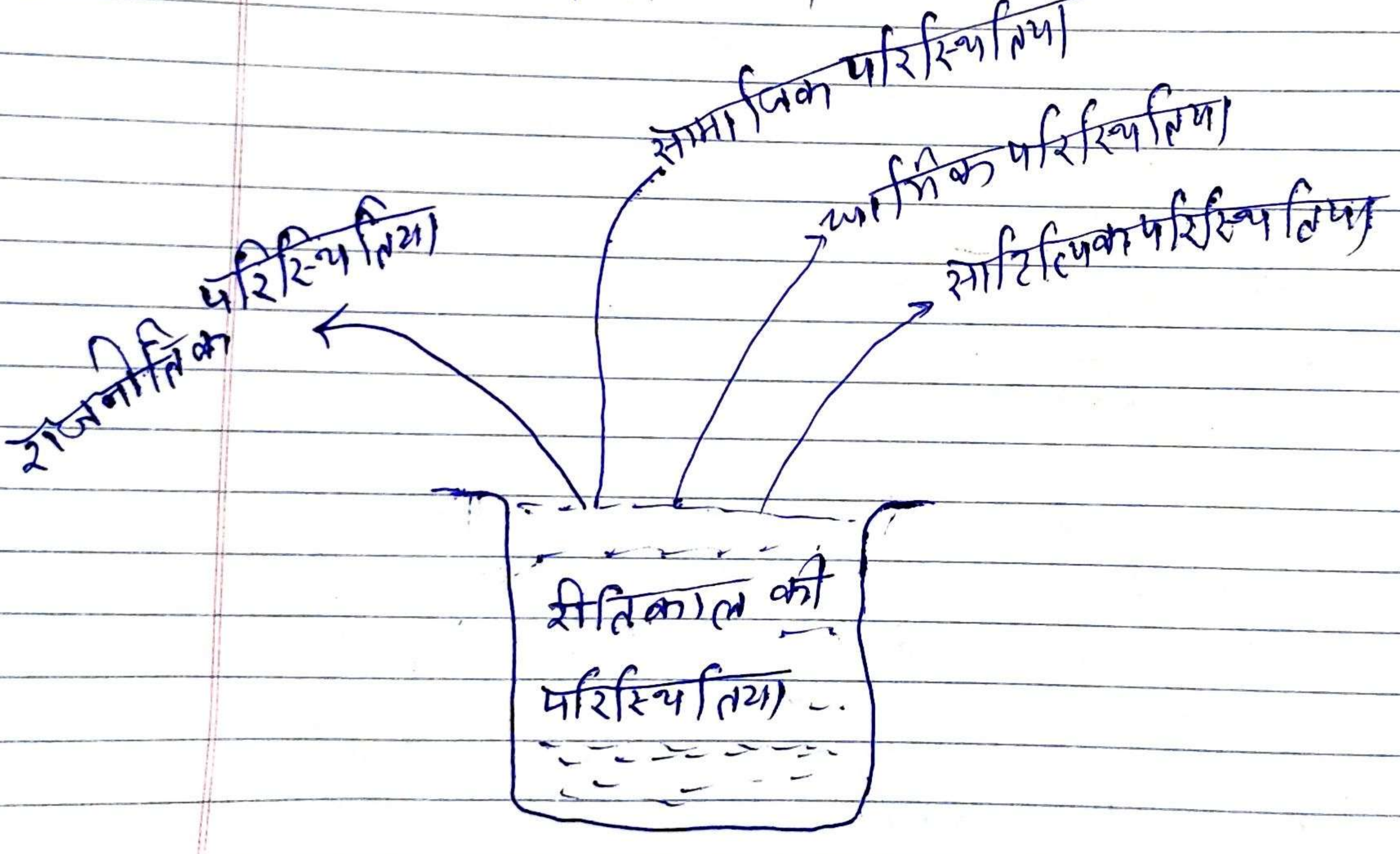

अयोध्या सिंह उपाध्याय का साहित्यिक परिचय

Page No. 16
Date / /

भूमिका :→

आधुनिक हिन्दी साहित्य के द्विवेदी युग मे खड़ी बोली की कविता को समुन्नत करने वाले कवियो मे अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी का अविस्मरणीय स्थान है। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के जिला आजमगढ़ की निजामाबाद तहसील मे सन् 1865 ई० मे हुआ। इनका विवाह सत्रह वर्ष की आयु मे हुआ था। इनका देहांत 1947 ई० मे हो गया था।

रचनाएँ →

इनकी प्रमुख रचनाएँ नि० लि० हैं

(i) काव्य :→ प्रिय प्रवास, बोलचाल, रसकलस आदि।
(ii) इतिहास ग्रंथ :→ हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास
(iii) पद्य निबंध :→ उद्बोधन
(iv) आलोचना :→ 'रस कलस'।

साहित्यिक विशेषताएँ :→

इनकी काव्य-कृतियों मे 'प्रिय-प्रवास' का मुख्य स्थान है यह खड़ी-बोली का प्रथम महा-काव्य है इसमे सत्रह सर्ग हैं पहले इन्होने इसका नाम 'ब्रजांगना-विलाप' रखा था, क्योंकि इसमे "नंदग्रामवासी" कृष्ण के विरह मे ब्रजवासियों की विह्लता का मार्मिक चित्रण है वैसे "प्रेम पुष्पोधर" इनकी पहली खड़ीबोली की कविता है जो सन् 1990 ई० मे लिखी गई थी। यह सन् 1904 ई० मे प्रकाशित हुई थी। 'हरिऔध' के काव्य की एक अन्य विशेषता प्रकृति-चित्रण भी है

भाषा-शैली :→

'हरिऔध' ने ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनो मे काव्य-रचना की है 'रसकमल' उनकी

20

ये ब्रजभाषा की प्रमुख रचना है किंतु काव्य-क्षेत्र में वे खड़ी बोली के संस्थापक कवियों में माने जाते हैं उनकी भाषा प्रायः प्रसाद गुण मयी और सरल है उन्होंने वर्णिक और मात्रिक दोनों प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है अतः कहा जाता है कि ये खड़ी बोली को काव्योपयुक्त बनाने वालों में अग्रगण्य हैं।

जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक-परिचय

भूमिका :-

हिंदी साहित्य के आधुनिक कवियों मे जयशंकर प्रसाद का नाम सर्वोच्च है। वे छायावाद के प्रवर्तक माने जाते है। उनका जन्म काशी के प्रसिद्ध 'सुधंनी साहू' परिवार में सन 1889 मे हुआ। इनके पिता का नाम देवी प्रसाद था। इन्होने अंग्रेजी, संस्कृत, हिंदी तथा उर्दू का भी ज्ञान प्राप्त किया। 17 साल की आयु मे ही बड़े भाई का देहांत हो गया। अनेक कठिनाईयों का सामना किया। उनके तीन विवाह हुए थे। 15 नवम्बर 1937 को स्वास्थ्य बिगडने के कारण इनकी मृत्यु हो गई।

प्रमुख रचनाएँ :-

प्रसाद जी एक बहुमुखी प्रतिभा समपन्न साहित्य कार थे। इनकी रचनाएँ नि० लि० हैं

(i) काव्य ग्रंथ :-

'कानन-कुसुम', 'चित्राधार', 'रचना' आदि।

(ii) उपन्यास :-

कंकाल, तितली, इरावती।

(iii) निबन्ध संग्रह :-

काव्य-कला तथा अन्य निबंध।

(iv) कहानी संग्रह :-

'आकाशदीप', 'आंधी'।

साहित्यिक विशेषताएँ :-

प्रसाद जी का साहित्यिक जीवन की कोमलता, माधुर्य, शक्ति और ओज का साहित्य माना जाता है। इनके साहित्य की प्रमुख विशेषताए है

(i) प्रेम तथा सौंदर्य का वर्णन :-

22

प्रेमानुभूति प्रसाद जी के काव्य की प्रमुख विशेषता है उनकी प्रेम भावना मानव, प्रकृति और ईश्वर से जुडी हुई है उनके काव्य मे मानवीय सौन्दर्य के सुन्दर उदाहरण देखे जा सकते है

(ii) राष्ट्रीय भावना :→

राष्ट्र और देश के लिए प्रसाद जी ने अपनी भावनाओ को विभिन्न प्रसंगो के माध्यम से अभिव्यक्त किया है 'चन्द्रगुप्त' नाटक मे कार्नेलिया भारत के मधुमय रूप का गान करती है।

(iii) प्रकृति-वर्णन :→

कवि ने प्रकृति चित्रण मे विशेष रुचि ली है उन्होने अपनी काव्य रचनाओ मे प्रकृति के अनेक रूपो का वर्णन किया है उन्होने प्रकृति के मधुर रूप का वर्णन किया है तो उसके भयानक रूप का भी वर्णन किया है

(iv) रस योजना :→

यूँ तो प्रसाद जी ने अपने काव्य मे अधिकांश रसो की योजना की है लेकिन करुण तथा श्रृंगार रस का अनेक काव्यो मे अत्यधिक संचार हुआ है

(v) भाषा-शैली :→

उनकी तत्सम प्रधान खड़ी बोली है उनकी भाषा में ओज, माधुर्य और प्रसाद तीनो गुण विद्यमान है

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का साहित्यिक - परिचय

भूमिका :→

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म 1896 ई० मे पश्चिम बंगाल की महिषादल रियासत के मेदिनीपुर नामक स्थान पर हुआ। उनके पिता का नाम रामसहाय त्रिपाठी था। उन्होने 'सरस्वती तथा मर्यादा' की पत्रिकाओं की पुरानी प्रतियों से हिंदी सीखी। 16 वर्ष की आयु मे मनोहरा देवी मे हुआ। इनका एक पुत्र रामकृष्ण तथा दूसरी पुत्री थी जिसका नाम सरोज को जन्म देने के बाद इनकी ~~पत~~ पत्नी मर गई। सन् 1961 मे जीवन के संघर्ष से जूझते हुए इनकी मृत्यु हो गई।

रचनाए :→

निराला जी एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं

(i) काव्य संग्रह :→ 'अनामिका', 'परिमल', गीतिका'।

(ii) उपन्यास :→ अलका, निरुपमा, अप्सरा आदि।

(iii) रेखा चित्रण :→ 'कुल्ली भाट', 'बिल्लेसुर बकरिहा'।

(iv) अनुवाद :→ रामचरित्र मानस की खड़ी बोली।

साहित्यिक विशेषताए :→

ये छायावाद के चार प्रमुख स्तंभो मे से एक हैं परन्तु इनके साहित्य मे प्रगति चेतना भी खुलकर प्रकट हुई हैं उन्होने अपने काव्य मे प्रकृति-चित्रण, राष्ट्र प्रेम, नारी के प्रति

Page No.
Date / /

व उदात्त प्रेम का हृदयग्राही वर्णन किया है इनके काव्य का प्रमुख स्वर 'विद्रोही' एवं पीड़ित दलित मानवता के प्रति सहानुभूति की अभिव्यक्ति करना रहा है।

(i) प्रेम और सौंदर्य का निरूपण :→

इनकी कविताओं में कवि ने शारीरिक और स्थूल-सौन्दर्य का अधिक चित्रण किया है जिसके फलस्वरूप कुछ स्थलों पर अश्लीलता भी उत्पन्न हो गई। जिनमे कवि के द्वारा वर्णित श्रृंगार और प्रेम बड़ा ही उदात्त और पावन बन पड़ा है।

(ii) प्रकृति वर्णन :→

उनकी काव्य रचनाओं मे प्रकृति के अलंकृत, मानवीकृत आदि विभिन्न रूप देखे जा सकते हैं इनमे उन्होंने छायावादी शैली के अनुसार प्रकृति के असंख्य चित्र प्रस्तुत किए हैं।

(iii) रहस्यानुभूति :→

निराला जी वेदान्त दर्शन से अत्यधिक प्रभावित थे और वे भक्ति को सर्वोपरि मानते थे। 'पंचवटी' प्रसंग मे उन्होंने मुक्ति और भक्ति पर गंभीर विचार किया है।

(iv) नारी के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण :→

उन्होंने कविताओं मे क्रमिक सुधार एवं विकास होता चला गया है "जूही की कली" जैसी स्थूलता अब लगभग समाप्त हो गई थी। कवि अपनी कविताओं

मे नारी के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाता हुआ प्रतीत होता है

(५) राष्ट्रीय भावना :-

उन्होंने अपनी कविताओ मे जैसे 'खून की होली जो खेली', जागो फिर एक बार आदि मे राष्ट्रीय भावना का वर्णन किया है उन्होंने सरस्वती माँ से भारत को स्वतंत्र रहने की बात कही है

भाषा शैली :-

निराला जी ने इन्होंने सहज, सरल, हिंदी भाषा का ही प्रयोग किया है निराला जी अपने सूक्ष्म प्रतीकों, लाक्षणिक प्रयोगो तथा नवीन उपमानों के लिए भी प्रसिद्ध हैं उनकी कविताओं मे संगीतात्मकता का समावेश है इनकी कविताओं मे भाव और भावाभिव्यंजना की दृष्टि से हिंदी की श्रेष्ठ रचनाओं मे गिनी जाती हैं

निराला जी द्वारा किया गया विधवा का कारुणिक चित्रण

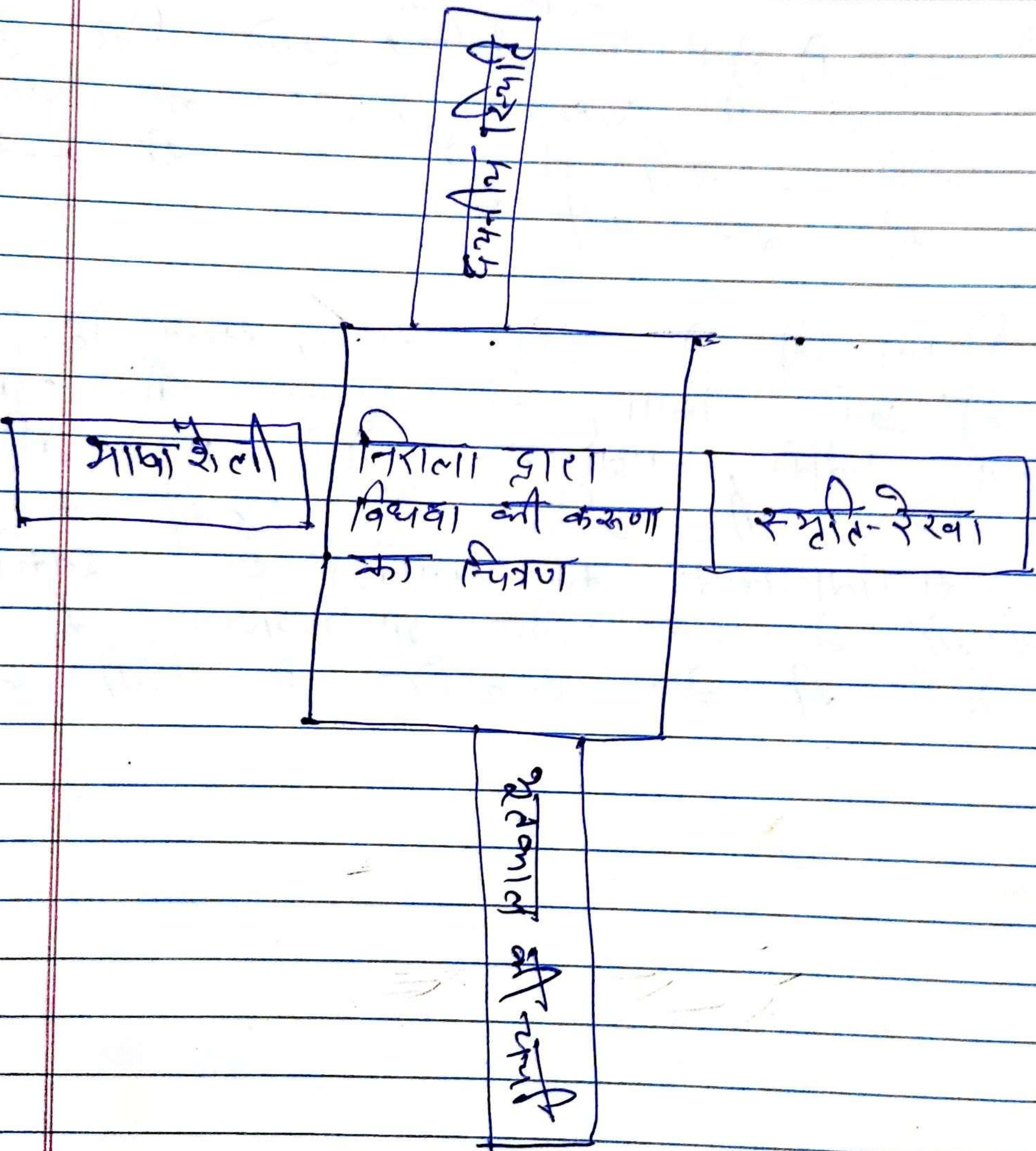

निराला जी द्वारा किया गया विधवा का कारुणिक चित्रण

भूमिका :→

निराला जी ने अपनी कविताओं मे उपेक्षित तथा अभावग्रस्त लोगो की करुणा और पीड़ा के मार्मिक चित्र अंकित किए है विधवा परतन्त्र काव्य की रचना है और विधवा की अवस्था गंभीर रूप धारण कर चुकी है उसका पुनर्विवाह नही होता है

दयनीय स्थिती :→

प्रस्तुत कविता मे कवि ने भारत की विधवा की दयनीय स्थिती पर प्रकाश डाला है कवि स्पष्ट कहा है की विधवा आराध्य देव के मंदिर की पुजा के समान है वह दीपक की लौ के बराबर शांत और अपने भावों मे लीन रहती है

स्मृति -रेखा :→

क्रूर मृत्यु के ताण्डव नाच की मानो वह स्मृति - रेखा है वह एक ऐसी दीन - दुर्बल झुकी हुई एक लता के समान है जिसको सहारा देने वाला वृक्ष व टूट गया है।

भूतकाल की चर्चा :→

कवि विधवा के भूतकाल की चर्चा करता है जब उसका पति जीवित था तो वह ऋतुओ के अनुसार श्रृंगार करती थी। और वह बिना डरे कोई भी काम कर सकती थी। लेकिन अब वह वैधव्य जीवन के

२४

Page No.
Date / /

कारण उसका जीवन दुःखमय हो गया । और अब वह श्रृंगार नहीं कर सकती ।

भाषा - शैली :→

कवि की भाषा - शैली सरल है और कवि ने भारतीय विधवा का वर्णन किया है और उसके दुखो को प्रकट किया है

"बादल - राग" कविता का उद्देश्य - निराला

भूमिका :→

बादल राग कवि की प्रगति - चेतना से संबंधित कविता है। इसमे उसने उच्च वर्ग के प्रति आक्रोश और घृणा की भावना दिखाई है और निम्न वर्ग के प्रति सहानुभूति दिखाई है। इस कविता के निम्न लिखित उद्देश्य प्रकट होते है।

(i) उच्च वर्ग के लोगो के प्रति आक्रोश :→

प्रगतिवादी कवि होने के नाते इस कविता मे गहरा आक्रोश दर्शाया है। उन्होने बताया है कि उच्च वर्ग के लोगों ने शोषण करके अपने खजाने भर लिए है। आने वाला समय उनके अनुकूल नहीं है और वह उच्च वर्ग के लोगो के विनाश की कहता है। और उच्च वर्ग के लोग बड़े 2 महलो मे रहने पर भी अपने आप को सुरक्षित समझेगें।

(ii) निम्न वर्ग के लोगो के प्रति सहानुभूति :→

इस कविता मे जहाँ कवि ने उच्च वर्ग के लोगो के प्रति आक्रोश व्यक्त किया है वही निम्न वर्ग के लोगो के प्रति सहानुभूति भी अभिव्यक्त की है। कवि कहता है कि जिस प्रकार बाढ़ का असर कमल पर नहीं पड़ता और आंधी का असर छोटे - पेड़ पौधो पर नहीं पडता है उसी प्रकार क्रांति का शोषित लोगो पर कोई प्रभाव नहीं पडेगा।

30

(iii) क्रांति की घोषणा →

निराला जी एक क्रांतिकारी कवि हैं अतः वे प्रगतिवादी कवियों की भाँति अपनी प्रगति चेतना की इतिश्री मात्र शोषक वर्ग के प्रति आक्रोश और शोषित वर्ग की प्रति सहानुभूति की अभिव्यक्ति करके ही नहीं कर लेते हैं बल्कि स्पष्ट शब्दों मे क्रांति की घोषणा करके शोषक वर्ग के विनाश व शोषित के उत्थान की कामना करते हैं

[रीतिकाल के नामकरण एवं पूर्वापर सीमा को]

भूमिका →

रीतिकाल के नामकरण के विषय में विद्वानों में परिवर्तन मतभेद रहा है। भौतिकवाद दृष्टिकोण से परिपूर्ण इस काल के साहित्य में विशेष प्रकार की विशेषताए थी। रीतिकालीन कवियों को काव्य रचना करते समय न तो परलोक तथा मोक्ष की चिंता थी और न ही तत्कालीन समाज की हिन्दी साहित्य के इतिहासकारो ने इस समाज को अनेक नामों से पुकारा है। किसी निश्चित नामकरण पर तो वे आज तक नही पहुच पाये है। प्राय साहित्य के इतिहास का नामकरण कृति, कर्ता, विषय की दृष्टि से किया जाता है। और कभी-2 यह कार्य साहित्य सृजन की शैलीयो पर किया जाता है। रीतिकाल के नामकरण के सम्बन्ध में निम्नलिखित विचार प्राप्त होते है।

* 1. **अलंकृत काल** → हिन्दी साहित्य के पहले इतिहासकारो ने विभिन्न कालो का नामकरण नही किया था। मिश्र बन्धुओ ने मिश्रबंधु

विनोद में हिन्दी साहित्य के इतिहास काल का विभाजन आदि मध्य और अंत अथवा आधुनिक भागों में किया था।

* 2. रीतिकाल → आचार्य राम चन्द्र शुक्ल ने अन्य कालो के समान इस काल के नामकरण के लिए दो आधार ग्रहण किये। मानव मनोविज्ञान और तत्कालीन प्रमुख प्रवृत्ति। मानव मनोविज्ञान के आधार पर उन्होंने इस युग के अंतर्गत स्थान देते हुए इसे उत्तर मध्य युग नाम दिया।

* 3. श्रृंगार काल → आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने विवेक काल को श्रृंगार काल नाम से पुकारा है। उन्होंने इस काव्य मे श्रृंगार रस की प्रमुखता को ध्यान मे रखकर यह नामकरण किया। इस काल में श्रृंगार के सभी अंगो का विवेचन नहीं किया गया है।

* 4. कला काल → डा० रमाशंकर शुक्ल ने इस काल मे कला पक्ष की प्रधानता देखकर इसे कला काल की संज्ञा दी। इस काल मे कला का जितना विकास हुआ उतना पहले कभी नहीं हुआ था।

[रीति मुक्त काव्य की परंपरा का उल्लेख करते हुए] 33

Page No.
Date / /

भूमिका

रीतिकाल के दो सौ वर्ष में ऐसे अनेक कवि हुए जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से रीति परंपरा का पालन नहीं किया। इन्होंने राजदरबारों के श्रृंगारिक वातावरण से अप्रभावित रहकर अपनी कविता में सायंत और स्वच्छंद प्रेम का चित्रण किया। इन्होंने भी श्रृंगार को अत्याधिक महत्व दिया इसलिए रीति शब्द इनके साथ जुड़ा हुआ है। इन रीतिमुक्त कवियों की संख्या लगभग पचास है। इन्होंने जीवन भर स्वच्छंद प्रेम का अंकन किया।

* 1 स्वच्छंद एवं सायंत प्रेम-चित्रण →

रीतिमुक्त कवियों के प्रेम में कहीं भी लुकाव - भुलाव छिपाव या धोखा नहीं है। इसमें कृत्रिमता का नामो-निशान नहीं है।
रीति मुक्त कवियों ने प्रेम के चित्रण में न ले दूर की कौड़ी पकड़ने का प्रयास किया

* 2. श्रृंगार वर्णन → रीतिमुक्त कवियों ने श्रृंगार

37

के संयोग और वियोग दोनों दोनों दोनो ही पक्षों का वर्णन किया। लेकिन संयोग श्रृंगार की अपेक्षा वियोग श्रृंगार में इनकी मनोवृत्ती अधिक रमी, जबकि रीतिबद्ध एवं रीतिसिद्ध कवियों का मन संयोग श्रृंगार वर्णन करने में अधिक रमता था। और ऐसी अवस्था में प्रेम की वास्तविक अभिव्यक्ति नहीं हो सकती। वियोग वर्णन में कवि मुखी होकर प्रेम की गहराई में डुबने का प्रयास करता है।

*3. सांस्कृतिक बिंबों की झांकी → रीति मुक्त कवियों ने स्वच्छंदतावादी दृष्टि कोण अपनाया और देश के विभिन्न भागों में सांस्कृतिक जीवन की सुंदर झांकी प्रस्तुत की। नरोत्तमदास ने तत्कालीन भारत की दृष्टिकोण का सजीव चित्रण किया है।

*4. प्रकृति चित्रण → हिन्दी साहित्य के प्रथम तीनो कालों में प्रकृति का वैसा चित्रण

* 5 भक्ति →
अधिकांश रीतिकालीन कवियों ने राधा कृष्ण के नाम का उल्लेख कर श्रृंगारी काव्य की रचना की है मात्र राधा कृष्ण का नाम लेने से उन्हें कवि की संज्ञा दी जाती है, यह तो केवल श्रृंगारिकता का चित्रण करते हैं कवच का

* 6. काव्य पद्धति →
रीतिमुक्त कवियों ने अपने प्रारम्भिक काव्य में रीति परम्पराओं को ग्रहण किया पर फिर उनका त्याग कर दिया इनके काव्य में रीतिबद्ध कवियों के समान नैत व्यापार खंडिता की उक्तियां आदि उपलब्ध हो जाती है।

7. काव्य शैली →
रीतिकाल की सर्वप्रथम काव्य शैली मुक्तक है रीतिमुक्त कवियों ने इसी परम्परा का निर्वाह किया पर इसके साथ २.

कुछ प्रबंध काव्य भी रचे गए। आलम माधवानल, काम कंदला सुदामा चरित और सान स्नेही नामक प्रबंध काव्यों की रचना की।

* 8. **ब्रज भाषा** → रीतिबद्ध कवियों ने भी ब्रज भाषा का प्रयोग किया था। लेकिन उन्होंने शब्दों को अपनी इच्छा से इस प्रकार तोड़ मरोड़ दिया था कि यही वे किसी अर्थ को बोध ही करवा पाते थे। लेकिन रीतिमुक्त कवियों ने अत्यंत साफ सुथरी भाषा का प्रयोग किया है। इनकी भाषा में प्रादेशिक भाषाओं का आभास नहीं मिलता।

Seen

रीतिकालीन काव्यधारा की विशेषताएँ

रीतिकालीन काव्य वह काव्य है, जिसमें संस्कृति के काव्यशास्त्रों के आधार पर काव्यअंगों का निरूपण किया जाता है। उस समय के राजा-महाराजा व आश्रयदाता केवल कविताएं पढ़कर या सुनकर ही सन्तुष्ट नहीं होते, बल्कि स्वयं काव्य रचना करने का प्रयास करते थे। इस काल के कवियों ने संस्कृत के काव्यशास्त्रों के आधार पर रचनाएं की थी। रीतिकालीन कवियों को दो भागों में वर्गीकृत किया जाता है:-

(क) एकतो वे कवि थे, जिन्होने केवल लक्षण-ग्रंथों की रचना की थी।

(ख) दूसरे वे कवि थे, जिन्होने लक्षण-ग्रंथों की रचना के साथ-साथ काव्य रचनाएं की थी। जिन्होने अप

रीतिकालीन काव्यधारा की प्रमुख विशेषता निम्नलिखित है:-

1) **श्रृंगारिकता:-**

रीतिकालीन काव्य में श्रृंगारिक प्रवृत्ति सर्वाधिक मिलती है। रीतिकाल के विलास-वैभव युक्त उन्मादक वातावरण ने कवियों को श्रृंगाररस से परिपूर्ण कविताएं लिखने के लिए प्रेरित ही नहीं किया अपितु उसको बढ़ावा दिया। श्रृंगाररस के संयोग व वियोग दोनों पक्षों का बड़ी सजगता से वर्णन किया है।

2) **अलंकारिकता:-**

सभी रीतिकालीन कवियों ने संस्कृत काव्यशास्त्र पर आधारित लक्षण-ग्रंथों की रचना की थी। उन्होने कविकर्म व आचार्यकर्म को एकसाथ निभाने का प्रयास किया।

इनलक्षण - ग्रंथों के निर्माण से भारतीयकाव्य का कोई विकास नहीं हुआ। उनका यह महत्त्व केवल कुछ ही विशेषताओं तक ही सीमित था।

4) भक्ति और नीति :-

रीतिकालीनकाव्य में पर्याप्त मात्रा में भक्ति और नीति से संबंधित सुक्तियां प्राप्त हो जाती हैं। ये कवि न तो भक्तकवि थे न ही राजनीति विशारद। राधा-कृष्ण के माध्यम से भक्ति करने का तात्पर्य केवल राजा-महाराजा व अपने आश्रय-दाताओं को खुश करना था।

5) वीरकाव्य :-

रीतिकालीन काव्य के समय राजनीतिक परिस्थितियाँ ऐसी बनगई थी कि मुस्लिम शासकों के विरुद्ध हिन्दुजनता के मन में विद्रोह की भावना उमडने लगी थी। भूषण, पदमाकर आदि कवियों ने वीरकाव्य ओजपूर्ण वाणी में परिपूर्ण काव्य की रचना की थी इन रीतिकालीन कवियों के काव्यों में छत्रशाल, गोविंद व शिवाजी ने अत्याचार व अन्याय के विरुद्ध अपनी तलवार उठा ली थी।

6) प्रकृति - चित्रण :-

रीतिकालीन काव्य में स्वतन्त्ररूप से प्रकृति-चित्रण नहीं हुआ। ये चित्र आलम्बन रूप से कम हैं। रीतिकालीन कवि राजदरबारों में आश्रयप्राप्त करके प्रकृति से दूर हो गए थे। उन्होंने प्रकृति के उद्दीपन व छह ऋतुओं का सुन्दर चित्रण किया है तीज-त्योहारों व झूले-डोलों का अच्छा चित्रण हुआ है।

7) लक्षण- ग्रंथों का निर्माण:-

सभी रीतिकालीन कवियों ने अपनी काव्य रचनाओं में लक्षण ग्रंथों का निर्माण किया। उन्होंने कविकर्म व आचार्यकर्म को एक साथ निभाने का प्रयास किया था। इनकवियों ने शक्ति चमत्कार के द्वारा पाठकों व स्त्रोताओं को एक बाँधने का प्रयास किया था। इन लक्षण-ग्रंथों ने भारतीय काव्यशास्त्र के विकास में कोई महत्त्व नहीं था।

8) नारी - चित्रण:-

इसयुग में नारी को केवल भोग-विलास की वस्तु माना जाता था। माता-बहन, गृहणी-प्रेमिका का अपना कोई रूप में नहीं था। इनकवियों ने स्त्री का अपना अस्तित्व नहीं आने दिया।

9) प्रतियोगिता की भावना:-

रीतिकाल में राजदरबार में प्राय: कवियों के दंगल लगते थे। सभी कवियों के द्वारा अपनी श्रेष्ठता को सिद्ध करने का भरपूर प्रयास किया जाता था। इस प्रकार रीतिकालीन काव्य के समय कवियों में प्रतियोगिता की भावना विराजमान थी।

10) काव्य-रूप:-

रीतिकवियों द्वारा अपनी कविताओं के द्वारा आश्रयदाताओं व राजाओं को खुश करने का भरपूर प्रयास किया जाता था। राजदरबार में राजाओं को खुश करने के लिए प्रबंधकाव्य की रचनाएं अनुकूल नहीं थी। इसलिए मुक्तकाव्य शैली को अपनाया गया था।

इसशैली से प्रायः राजा - महाराजा व आश्रयदाता खुश हो जाते थे, कवियों व रचनाकारों को मुहमांगी इनाम मिल जाती थी।

10) ब्रजभाषा की प्रधानता:-

रीतिकाव्य की प्रमुख भाषा ब्रजभाषा थी। ब्रजभाषा में कोमलरसों का भण्डार है। इसलिए रीतिकालीन कवि ब्रजभाषा की तरफ आकर्षित हुए। रीतिकाल की प्रमुख साहित्यिकभाषा ब्रजभाषा थी। अलंकारप्रिय होने के कारण रीतिकालीन कवियों ने इसभाषा को चुना।

निःसंदेह ब्रजभाषा मधुर व कोमल रसों की अभिव्यक्ति करने में समर्थ थी। इसकाल में यह भाषा इतनी लोकप्रिय थी कि हिन्दु व मुस्लिम सभी कवियों ने अपनी काव्य रचना के लिए इसभाषा का प्रयोग किया था।

भूषण, देव आदि कवियों ने अपनी इच्छानुसार इसभाषा के शब्दों को तोड़ा -मरोड़ा। इसकाल के कवियों ने व्याकरणिक दोष भी किए थे। परन्तु सभीकवियों की भाषा दोषपूर्ण नहीं थी। इसलिए रीतिकाव्य रचनाओं की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसका ऐतिहासिक व साहित्यिक महत्त्व सर्वाधिक है।

इसप्रकार रीतिकालीनकाव्य में ऐसी खिचडी पकाई जो स्वादिष्ट होनेपर भी हितकर नहीं हुई। काव्यप्रकाश पर लिखनेवालों ने प्रायः सभीकाव्यअंगों पर लिखा था।

रीतिबद्ध काव्यधारा की विशेषताएँ।

रीतिकाव्य के अन्दर विशाल काव्यकी रचना हुई थी। इसयुग के कवियों के द्वारा दो प्रकार की रचना की गई।

क) पहलीरचना - रीतिसिद्ध कवियों के द्वारा हुई
ख) दूसरी रचना - रीतिबद्ध कवियों के द्वारा हुई।

इनदोनों कवियों में कोई अन्तर नहीं था। रीतिसिद्ध कवियों ने लक्षण - ग्रंथों की रचना की थी, रीतिबद्ध कवियों ने इनग्रंथों के आधारपर काव्य रचनाए की। रीतिबद्ध काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं:-

i) सर्वांग निरूपण:-

सारे अंगों का निरूपण। इसकी में वे कवि आते हैं, जिन्होने काव्यअंगों के रुपों का वर्णन किया। इनकवियों ने लक्ष्यग्रंथों का अध्ययन करके अपर कविताएं लिखी थी। किन्तु वे कवि छंद के क्षेत्र को छोड़कर कविता कोई नयापन नहीं दिया गया। उन्होंने काव्य के सभी अंगों पर अपनी रचनाएं की थी। इनके उदाहरण भी पेश किए गए थे। ये वास्तव में लक्षणों अनुरुप व श्रेष्ठ हैं। इनमें मुख्यरूप से देव, दास, सोमनाथ, ग्वाल आदि कवियों के नाम लिए जा सकते हैं।

श्रृंगार रस का वर्णन:-

रीतिबद्ध कवियों ने श्रृंगाररस को शिरोमणी मानकर उसका संयोगपांग वर्णन किया है। इनकवियों में मतिराम, कृष्णभट्ट, देव आदि कवियों के नाम लिए जा सकते हैं।

मतिराम के सुप्रसिद्ध लक्षण - ग्रंथ 'रसराज' में श्रृंगाररस का संयोगपांग वर्णनकिया गया है।

इनके दोहों, कवित्तों, सवैयों में उक्त विषय में मनोयोगपूर्ण प्रस्तुत किया गया है। आरंभमें नायिका और नायक को श्रृंगार के आलम्बनरूप में स्वीकार करते हुए दोनों का निरूपण भानुदत्त की 'रसमन्जरी' और 'रहीम' के 'बरवै नायिका -भेद' पर किया गया है।

नायक- नायिका भेद निरूपण :—

रीतिकालीन रीतिबद्ध कवियों ने नायक -नायिका भेद विषय का विवेचन किया गया है। मौलिकता की दृष्टि से इनके ग्रंथों एवं विषय या निरूपन की दृष्टि से उनका विशेष महत्त्व नहीं है। इनकवियों ने नायक -नायिका भेद विषयों का वर्णन परम्परागत ढंग से किया गया है। इनमें किसीभी प्रकार की सूक्ष्मता को ध्यान में नहीं रखा गया। इनके वर्णन में ऐसे छन्दों का प्रयोग किया गया, जो इसकाव्य के कवियों के द्वारा श्रृंगाररस के लिए प्रयोग नहीं किया गया था।

अलंकार निरूपण :—

रीतिकालीन रीतिबद्ध काव्य में श्रृंगाररस व नायक -नायिका भेद निरूपन के समान ही अलंकार निरूपन भी इसकाव्य की अन्य प्रमुख विशेषता है। अलंकार विवेचन कवियों की संख्या भी अत्याधिक है। सभी ने कवित्त- प्रदर्शन के स्थानपर अलंकार का सामान्य ज्ञान रखने के उद्देश्य से स्तद् विषयक ग्रंथों का निर्माण किया था। सामान्यरूप से सुबोधता व सुस्पष्टता का ध्यानरखा है। शब्दालंकार व अर्थालंकार दोनोही प्रकार इनकवियों के विवेचन का विषय रहा किन्तु कुछ ऐसे कवि थे, जिन्होंने केवल अर्थालंकार को ही अपने विषयों का आधार बनाया था।

वीर भावना :-

वीरकाव्य भी इसकाल की एक अलग प्रवृत्ति है। वीरकाव्यधारा के प्रमुखकवि भूषण है। वैसे तो रीतिकालीनकाव्य में श्रृंगारसे परिपूर्ण रचनाओं का बोलबाला रहा। भूषणका काव्य इस युग-प्रेरणा की उपज था। लेकिन कुछकवि ऐसे भी हुए थे, जिन्होंने वीरता से परिपूर्ण काव्य की रचना की गई। भूषण ने छत्रशाल और शिवाजी को काव्यनायक बनाकर उनकी विरता का ओजस्वीयुक्त भाषा में वर्णन किया था। इसके अलावा लाल, सूदन व पद्माकर ने भी वीरता से परिपूर्ण काव्य की रचना की थी। इसकाल में मुस्लिम शासकों के खिलाफ गोविंद सिंह, शिवाजी, महाराणा राजसिंह आदि ने तलवार उठाई थी। रीतिकालिन कवि दरबार में रहने के कारण राजाओं को खुशकरने के लिए उनके शौर्य, वीरता, यश, गुण, रूप व कीर्ति का बखान करते थे। विशेषकर लाल, पद्माकर व सूदन आदि रीतिकालीन कवियों ने अपनी ओजस्वी वाणी के द्वारा राष्ट्रीयता को अभिव्यक्त किया।

प्रकृति - चित्रण :-

वैसेतो रीतिकालीन कवि एक दरबारी कवि थे। वे अपनेराजाओं को खुश करने में लगे रहते थे। उनके यशोगान के लिए काव्यरचनाएं करते थे। ज्यादातर तो ये कवि प्रकृति, फल-फूल व नारी के शारीरिक सौंदर्य से संबंधित कविताएं लिखते थे। अतः इनकवियों के पास इतनासमय नहीं थी कि ये उससमय की प्राकृतिक सुन्दरता का

स्वतंत्रतापूर्वक वर्णन कर सकें। फिरभी तत्कालीन कवियों को प्रकृति की नैसर्गिक सुन्दरता प्रभावित करती रही। चिंतामणी ने अपनी कविताओं में कोयलकी कुक का सुन्दर वर्णन किया है। कवि मतिराम ने भी प्राकृतिक उदाहरणों के द्वारा प्रेमिका का सुन्दर चित्रण किया है।

कवि मतिराम व बेनी ने भी प्रकृति -वर्णन में अपनी रुचि दिखाई:-

"आपने हाथ सों देत महावर,
आप ही बार सिंगारत नीके।
आपन ही पहिरावत आनि कें,
टार सँवारि के मौलसिरी के।"

इसप्रकार तत्कालिक रीतिकालीन रीतिबद्ध कवियों ने प्राकृतिक सुन्दरता, अलंकार वर्णन श्रृंगारवर्णन व नायक - नायिका भेदों का सुंदर चित्रण किया है।

रीतिकालीन हिन्दी काव्य के प्रेरक तत्व

रीतिकालीन हिन्दी कविता का प्रारंभ सत्रहवीं सताब्दी से माना जाता है। परन्तु रीतिकालीन कविताएं व उसकी विशेषताएं प्राकृत व संस्कृत की श्रृंगारिक मुक्त रचनाएं देखी जा सकती हैं भतहरि का श्रृंगार शतक, कालिदास का श्रृंगार तिलक आदि रचनाओं में विभिन्न श्रृंगारिक लीलाओं का वर्णन मिलता है इसके अलावा जयदेव के गीतगोविंद में चित्रित विलास - लीलाओं व नायिका भेद, विद्यापति की पदावली का वर्णन, पृथ्वीराजरासो का श्रृंगारवर्णन व नंद-दास की रसमन्जरी आदि ने रीतिकालीन काव्य में हिन्दी काव्य में अलंकरण व श्रृंगार वर्णन की पृष्ठ-भूमि प्रदान की थी। रीतिकालीन काव्य में संस्कृत के आचार्यों द्वारा प्रस्तुतरस, अलंकार और ध्वनि से संबाधित ज्ञान का उपयोग किया जाता है काव्यशास्त्रीय ग्रंथों के अतिरिक्त रीतिकालीन काव्य में ज्योषित, वैदक गणित, दर्शन व नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्रों से जानकारी ग्रहण की थी।

हिन्दीके आदिकाल में रचित पृथ्वीराज-रासो, हम्मीररासो, बीसलदेवरासो आदि में वर्णित आश्रयदाताओं की ज्यादा - से ज्यादा बढा -चढाकर यशोगाथा व कीर्तिगाथा लिखी थी। हिन्दी रीतिकालीन कवियों ने उससे प्रभावित होकर अपने आश्रयदाताओं का चापलूसीपूर्ण यशोगान किया। परन्तु कुछकवियों ने छत्रपति शिवाजी, छत्रशाल आदि की वीरतापूर्ण रचनाएं की थीं

हिन्दीकालीन साहित्य के भक्तिकाल में प्रचलित रामरसिक सम्प्रदाय, कृष्णभक्त कवियों की साहित्य लहरी, रसमन्जरी आदि रचनाओं ने भी हिन्दी के रीतिकालीन कवियों को नायिका भेद, श्रृंगार की विभिन्न पक्षों, कामकाला की क्रीडाओं से संबंधित काव्यों की रचनाओं के लिए पृष्ठ-भूमि तैयार की थी। अपभ्रंस साहित्य की कल्पित कथाओं पर आधारित प्रेमकाव्यों की परम्परा के अभाव में हिन्दी के रीतिकालीन काव्यों पर दिखाई देता है। रीतिकालीन कवियों ने अपभ्रंस तथा काव्यों में प्रचलित शैली, कथानक रुढियों, उपदेश आदि सबकुछ अपना लिया था। भक्ति काल की सन्त व सूफी परम्परा की कुछ रचनाएं भी रीतिकाल में हुई। भक्ति और नीति से सबंधित रचनाएं भी पूर्ववती भक्तिकालीन कवियों से प्रभावित व प्रेरित हैं।

इसप्रकार स्पष्ट है कि रीतिकालीन हिन्दीकाव्य की पृष्ठभूमि तैयार करने में प्राकृत, अपभ्रंस, संस्कृत आदि भाषा में रचित श्रृंगारिक साहित्य का बहुत योगदान रहा है।

कामशास्त्रीय ग्रथों व काव्यशास्त्रीय रचनाओं में रीतिकालीन कवियों के लिए श्रृंगार की विभिन्न क्रीडाओं को चित्रित करने का पथ-प्रदर्शन किया। संस्कृत के काव्यशास्त्रीय ग्रथों से इन्होने रस, अलंकार, ध्वनि आदि भेदों को ग्रहण करके आचार्यत्व का प्रदर्शन किया। भक्तिकालीन रामरसिक व कृष्णरसिक काव्य में भी इन्हें श्रृंगारिक काव्य रचना की प्रेरणा दी थी।

Experiment

Date :
Page No. 27

रीतिकालीन हिन्दी कविता की पृष्ठभूमि

रीतिकालीन हिन्दी कविता 17वीं शताब्दी से प्रारंभ मानी जाती है, परन्तु रीतिकालीन प्रवृत्तियों की पृष्ठभूमि प्राकृत एवं संस्कृत की 'श्रृंगारिक मुक्तक' रचनाओं में देखी जा सकती है। भर्तृहरि का 'श्रृंगार शतक', अमरुक का 'अमरुक शतक', गोवर्धनाचार्य की 'आर्य सप्तशती', नरहरि के 'श्रृंगार तिलक', बिल्हण की 'चौरपंचाशिका' आदि रचनाओं में विभिन्न श्रृंगारिक लीलाओं का वर्णन प्राप्त होता है, इसके अतिरिक्त वात्स्यायन का 'कामसूत्र', कोक्कन, जयदेव, वीरभद्र आदि की कामशास्त्रीय रचनाओं ने भी हिन्दी रीतिकालीन काव्य को प्रभावित किया है। जयदेव के 'गीत गोविंद' में चित्रित विलास-लीलाओं तथा नायिका भेद, विद्यापति की पदावली के वर्णन, पृथ्वीराज रासो के श्रृंगार वर्णन, कृपाराम की हित तरंगिनी, सूरदास की साहित्य लहरी आदि ने हिन्दी काव्य में अलंकरण एवं श्रृंगार वर्णन की पृष्ठभूमि प्रदान की थी। हिन्दी रीतिकालीन काव्य का शास्त्रीय चिंतन की पृष्ठभूमि भी संस्कृत के काव्य शास्त्रीय ग्रंथों में देखी जा

सकती है। रीतिकालीन काव्य में संस्कृत के आचार्य द्वारा प्रस्तुत रस, अलंकार तथा ध्वनि से संबंधित ज्ञान का उपयोग किया गया है, आचार्य मम्मट के काव्य प्रकाश विश्वनाथ के साहित्य दर्पण तथा जगन्नाथ के रस गंगाधर ग्रंथों में व्यक्त रस अलंकार तथा ध्वनि से संबंधित विचारों का रीतिकालीन हिंदी कवियों ने अपनी आवश्यकता के अनुरूप उपयोग किया है। हिन्दी साहित्य के आदिकाल में रचित हम्मीर रासो, पृथ्वीराज रासो, बीसल देव रासो आदि में वर्णित आश्रयदाताओं की इन ग्रंथों में रचनाकारों ने जैसी अतिशयोक्तिपूर्ण कीर्ति गाथा कही है उससे प्रभावित होकर हिंदी के रीतिकालीन कवियों ने भी अपने-२ आश्रयदाताओं का चाटु-कारितापूर्ण यशोगान किया है। परंतु कुछ कवियों ने छत्रपति शिवाजी, छत्रसाल आदि की वीरता का यथार्थ के धरातल पर प्रशंसात्मक रचनाएं की है। हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में प्रचलित राम रसिक संप्रदाय, कृष्णभक्त कवियों की साहित्य लहरी रस मंजरी आदि रचनाओं ने भी हिन्दी साहित्य के रीतिकालीन कवियों ने भी नायिका-भेद

श्रृंगार के विभिन्न पक्षों से संबंधित काव्यों की रचनाओं के लिए पृष्ठभूमि प्रदान कर दी थी। भक्तिकाल की संत और सूफी काव्य की परंपरा की कुछ रचनाएँ भी रीतिकाल में हुई है। भक्ति और नीति से संबंधित रचनाएँ, पूर्ववर्ती भक्तिकालीन कवियों से प्रभावित एवं प्रेरित है। इस प्रकार स्पष्ट है कि रीतिकालीन हिन्दी काव्य की पृष्ठभूमि तैयार करने में अपभ्रंश, प्राकृत, संस्कृत आदि भाषाओं में रचित श्रृंगारिक साहित्य का बहुत योगदान रहा है। काम-शास्त्रीय ग्रंथों तथा काव्यशास्त्रीय रचनाओं ने भी रीतिकालीन कवियों के लिए श्रृंगार की विभिन्न क्रीडाओं का चित्रित करने के लिए पथ-प्रदर्शन किया तथा संस्कृत के काव्यशास्त्रीय ग्रंथों से इन्होंने रस, अलंकार, ध्वनि आदि के भेदों को ग्रहण कर आचार्यत्व का प्रदर्शन किया। भक्ति कालीन रामरासिक एवं कृष्ण रासिक काव्यों ने भी इन्हें श्रृंगारिक काव्य रचनाओं की प्रेरणा दी।